पाठ–5

सहेली

मार्च का महीना था, पतझड़ का मौसम होने की वजह से पेड़ों से पीली पत्तियों के साथ पतली–पतली शाखाएँ भी टूट रही थीं। शाम को मौसम ठंडा हो जाता तो मिनी अपनी पहिए वाली कुर्सी को बालकनी में ले आती। बारह वर्ष की मिनी के हाथ–पैर कमजोर थे, इसलिए खेल नहीं सकती थी, बस कुर्सी पर बैठे खेलते बच्चों को निहारती रहती।

एक दिन वह बालकनी में बैठी बच्चों को खेलते देख रही थी। तभी उसकी माँ ने पुकारा, ''मिनी अंदर आ जाओ न!''

''एक मिनट रुक जाओ, माँ!'' मिनी ने कहा। वह बच्चों का एक बड़ी–सी लाल गेंद को उछाल–उछाल कर खेलना देख रही थी। तभी माँ ने कहा ''मिनी, अगर बारिश हो तो अंदर आ जाना, भीगना मत।''

मिनी को प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के लिए खास प्रकार के स्कूल में भेजा जाता था। इस स्कूल में उसे पढ़ाई के साथ तरह–तरह के व्यायाम और बोलना भी सिखाया जाता था, जिससे उसे काफी फ़ायदा भी हुआ। अब वह धीरे–धीरे चलने के साथ हाथों से पेन, ब्रश या चम्मच पकड़ना सीख गई थी। पहिए वाली कुर्सी से वह घर में यहाँ–वहाँ आ जाया करती थी। हालाँकि सुबह पापा स्कूल छोड़ आया करते थे और शाम को मम्मी जाकर ले आती थीं।

मिनी के परिवार को इस कॉलोनी में आए हुए छह माह हो गए थे, पर उससे किसी की दोस्ती नहीं हुई थी।

बच्चे अभी भी पार्क में खेल ही रहे थे कि बारिश शुरू हो गई, पर बूँदों की परवाह किए बगैर ही बच्चे खेलने में मस्त थे। तभी अचानक एक भूरे रंग की गेंद–सी कोई चीज नीचे गिरी। बच्चे चीखते हुए उसके आस–पास जमा हो गए और उसे गौर से देखने लगे, वो छोटी–सी वस्तु पंख फड़फड़ाते हुए मिनी की गोद में आकर गिर गई।

पहले तो मिनी घबरा गई। फिर उसने हिम्मत करके देखा तो वो चीज गेंद नहीं, एक पक्षी था। डर के कारण वो पक्षी मिनी की गोद में दुबका हुआ था। अचानक बारिश की बूँदे तेजी से गिरने लगीं।

''माँ .....माँ..... जल्दी आओ,'' मिनी ने माँ को पुकारा।

''क्या बात है मिनी ?'' माँ ने कहा।

''देखो माँ, आसमान से ये पक्षी गिरा है।'' मिनी माँ को पक्षी दिखाते हुए बोली।

माँ ने बताया, ''मिनी, यह बतख है– शौवलर प्रजाति की बतख। यह उन प्रवासी पक्षियों में से एक है जो हजारों किलोमीटर दूर उत्तर की ओर बर्फानी प्रदेशों में रहते हैं। जब वहाँ सर्दी और ज्यादा बढ़ जाती है तो वे दक्षिण की ओर गर्म प्रदेशों में उड़ जाते हैं जाड़े के मौसम में यहीं रहते हैं और गर्मियाँ शुरू होते ही वापस लौट पड़ते हैं।''

''लगता है बहुत थक गई है ये माँ,'' मिनी ने कहा।

''हाँ, ऐसा लगता है कि अपने घर लौटते वक्त अपने झुंड से बिछुड़ गई है। अपने बाकी साथियों को खोजने के लिए ज्यादा उड़ान भरने की वजह से थक गई और ऐसे में पंख कहीं टकरा गए जिससे घायल हो गई।'' माँ ने कहा

''हाँ माँ, ऐसा ही लगता है।'' मिनी ने कहा।

माँ ने जैसे ही पक्षी को उठाना चाहा तो वह लड़खड़ाती हुई अंदर वाले कमरे में चली गई और एक कोने में लेटकर हाँफने लगी।

मिनी और माँ ने उसे खिलाने की बहुत कोशिश की पर उसने कुछ भी नहीं खाया।

''माँ शायद ये दूध–चावल खा ले।'' मिनी बोली।

माँ ने मिनी के कहे अनुसार ही चावल और दूध मिलाकर एक कटोरी में रखा, पर बतख ने उसे मुँह भी नहीं लगाया। तब मिनी ने उसे गोद में बिठाकर ड्रॉपर से दूध पिलाया। दूध पीते ही उसकी आँखें चमकने लगीं। अब वो पंख फैलाकर मिनी की गोद में लेट गई।

''माँ, यह मेरी सहेली है। मैं इसका नाम 'सहेली' रखूँगी।'' मिनी ने कहा।

माँ मुसकुरा दी।

रात होने पर उसके पिताजी ने पूछा, ''मिनी की सहेली कहाँ सोएगी।''

''यहाँ मेरे पास।'' मिनी ने अपने पलंग की तरफ इशारा करते हुए कहा।

सहेली को एक टोकरी में सूखी घास रखकर सुला दिया गया।

सुबह उठकर मिनी ने देखा तो टोकरी खाली थी, वह जोर से पुकारने लगी, ''सहेली, सहेली।'' तभी देखा कि सहेली बाथरूम के दरवाज़े के पास भीगी हुई झाँक रही है। ये देखकर मिनी हँसने लगी। मिनी उसके पास जैसे ही गई, वह पंख फड़फड़ाकर दूर जा खड़ी हुई। यूँ ही दोनों एक दूसरे के साथ कुछ देर तक खेलती रहीं।

तभी माँ कमरे में आई और कहा, ''चलो मिनी, तुम्हारा और तुम्हारी सहेली का नाश्ता तैयार है।''

'माँ, पहले सहेली को खिला दूँ। फिर खुद खाऊँगी।'' मिनी ने कहा।

तभी दरवाज़े की घंटी बजी। कई बच्चे वहाँ खड़े थे। उन्होंने पूछा, ''आंटी, क्या हम बतख को देख लें।''
हाँ .....हाँ .....आओ.....यह देखो।

मिनी बतख को लिए ड्रॉपर से दूध पिला रही थी। सभी बच्चों ने उसे छू–छूकर देखा और अपने स्कूल जाते–जाते कह गए, मिनी हम सब स्कूल से लौटकर फिर आएँगे। मिनी ने भी नाश्ता किया और सहेली को टोकरी में लिटाकर अपने स्कूल के लिए तैयार होने चली गई। शाम को बच्चे मिनी के घर आए। बंटी बोला, इस बेचारी सहेली के साथी तो बहुत दूर उड़ गए होंगे।

''और यहाँ तो इसका कोई दोस्त भी नहीं बनेगा क्योंकि ये लंगड़ी हो गई है।'' अंजू ने कहा। लेकिन मिनी का ध्यान आते ही उसने अपने मुँह पर हाथ रख लिया।

''मैं उसके पैर और पंख को दवाई लगाकर ठीक कर दूँगी। ठीक होते ही देखना यह फिर से उड़ सकेगी।'' मिनी ने कहा। सभी बच्चों ने हाँ में अपनी गरदन हिलाई। धीरे–धीरे बच्चे मिनी के दोस्त बन गए।

कुछ दिन बाद 'सहेली' बिलकुल ठीक हो गई। एक कमरे से दूसरे कमरे में उड़ती रहती थी। एक दिन मिनी के पिताजी मिनी और बच्चों को नहर के पास वाले पार्क में ले गए। सहेली को भी साथ लेकर गए। 'सहेली' को नहर में तैरने के लिए उतारा, वह धीरे–धीरे तैरने लगी और फिर पंख फड़फड़ाकर पानी में उछलने लगी। बच्चे बहुत देर तक उसे तैरते हुए देखते रहे। वह तैरते–तैरते दूर निकल गई।

मिनी और बच्चे सहेली को 'टा–टा, बाय–बाय' कहकर अपने घर लौट आए। शाम को सभी बच्चे अपने घर लौट गए। मिनी उदास बैठी थी। बच्चे भी खेलने नहीं आए थे। तभी दरवाज़े की घंटी बजी। सारे बच्चे वहाँ खड़े थे। अंजू ने कहा, ''आंटी, मिनी को हमारे साथ खेलने भेज दीजिए। हम उसे बहुत संभालकर ले जाएँगे।''

''हम सब उसका ध्यान रखेंगे।'' बंटी बोला। मिनी को अब बहुत से मित्र मिल गए थे। अब मिनी उदास और अकेली नहीं रहेगी।

पदमा राव

शब्दार्थ

प्रारंभिक	–	शुरुआती
हिम्मत	–	साहस
ड्रॉपर	–	बूँद–बूँद कर तरल पदार्थ गिराने वाली पिचकारी
पार्क	–	बगीचा

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

प्रारंभिक, ड्रॉपर, शौवलर, प्रजाति

सोचें और बताएँ

1. मिनी को प्रांरभिक शिक्षा पूरी करने के लिए खास प्रकार के स्कूल में क्यों भेजा जाता था ?
2. प्रारंभ में मिनी की कोई सहेली क्यों नहीं थी ?
3. शौवलर प्रजाति के पक्षी अपने मूल स्थान से गर्म प्रदेशों में क्यों उड़ जाते हैं ?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मिनी की गोद में आकर गिरने वाली चीज़ थी –

   (क) कबूतर (ख) शौवलर प्रजाति की बतख

   (ग) भूरे रंग का तीतर (घ) सारस ( )
2. मार्च के महीने में मौसम होता है –

   (क) ठंड का (ख) गर्मी का

   (ग) पतझड़ का (घ) बरसात का ( )

निम्न वाक्यों के आगे सही वाक्य पर सही का (✓)गलत वाक्य पर गलत (✗) का चिह्न लगाएँ

1 मिनी अन्य बच्चों के साथ सामान्य स्कूल में पढ़ती थी। ( )
2 जब बतख मिनी की गोद में आकर गिरी तो पहले तो वह घबरा गई। ( )
3 मिनी ने बतख को चावल व दाल खिलाई। ( )
4 सभी बच्चे मिनी के मित्र बन गए। ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मिनी बालकनी में बैठकर क्या करती थी ?
2. शौवलर प्रजाति के पक्षी भारत में किस मौसम में आते हैं और वापस कब लौट जाते हैं?
3. बतख मिनी के घर पर कैसे आ गई थी ?
4. मिनी का ध्यान आते ही अंजू ने अपने मुँह पर हाथ क्यों रख लिया था ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मिनी अन्य बच्चों के साथ खेलने क्यों नहीं जा पाती थी ?
2. मिनी ने बतख की देखभाल कैसे की ?
3. अन्य बच्चों की मित्रता मिनी से कैसे हुई ?
4. मिनी व उसके पापा ने बतख को नहर के पानी में क्यों छोड़ दिया ?

भाषा की बात

1. अब वह धीरे–धीरे चलने के साथ अन्य कार्य भी करने लगी।

   प्रस्तुत वाक्य में रेखांकित वाक्यांश में 'धीरे–धीरे' शब्द चलना क्रिया की विशेषता बता रहा है।

   जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

   आप भी पाठ में आए अन्य ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखें जो क्रिया की विशेषता बताते हैं।

2. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए–

   माँ! कमरे में आई।

   ऋचा बहुत थक गई थी।

   मिनी का कोई दोस्त नहीं था।

   बतख तैरने लगी ।

   हम अपने भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह का प्रयोग करते हैं, जिसे वाक्य कहते हैं।

   वाक्य के दो भाग होते हैं –

   1. उद्देश्य 2. विधेय

   उद्देश्य यानी कर्ता, विधेय यानी कर्ता के विषय में जो कुछ कहा जाए।

   उपर्युक्त वाक्यों में उद्देश्य व विधेय निम्नानुसार हैं –

	उद्देश्य	**विधेय**
1.	माँ!	कमरे में आई।
2.	ऋचा	बहुत थक गई थी।
3.	मिनी का	कोई दोस्त नहीं था।
4.	बतख	तैरने लगी।

   रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

   1. साधारण वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य

   साधारण वाक्य – जिस वाक्य में एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है, अर्थात एक कर्ता और उसकी एक ही क्रिया होती है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। उपर्युक्त सभी वाक्य साधारण वाक्य हैं।

   आप भी अपनी पाठ्यपुस्तक में से पाँच साधारण वाक्य छाँटकर लिखिए।

पाठ से आगे

1. अगर आपके परिवार में या आस–पास मिनी जैसा बालक/बालिका हो तो आप उसके साथ

कैसा व्यवहार करेंगे ?

2. अगर मिनी की माँ! बतख को घर में नहीं रखने देती तो क्या होता ?
3. अगर मिनी की जगह आप होते तो बतख का क्या करते ?

यह भी करें

सरकार द्वारा विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है, जिससे उन्हें अपने दैनिक कार्य करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो। आप उन व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

यह भी जानें

हमारे आस–पास या परिवार में ऐसे लोग होते हैं जो अपने दैनिक कार्यों को करने में असुविधा महसूस करते हैं। उन्हें विशेष सहायता की आवश्यकता होती है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम ऐसे व्यक्तियों की सहायता करें उन्हें उनकी निःशक्तता का अहसास नहीं कराएँ, बल्कि उनके साथ मित्रवत तथा सम्मानपूर्वक व्यवहार करें।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

अतिथि देवो भव। – अतिथि देवता के समान हो।